गरीबी और समावेशी विकास

By : Dr. Bharat Sir

प्रश्न 1. भारत में समावेशी और सतत आर्थिक विकास सुनिश्चित करने में क्या चुनौतियाँ हैं? इन चुनौतियों से निपटने के लिए उपाय सुझाएँ।

उत्तर : भारत में समावेशी और सतत आर्थिक विकास सुनिश्चित करना एक जटिल और बहुआयामी चुनौती है। हाल के दशकों में देश की उल्लेखनीय आर्थिक प्रगति के बावजूद, भारत को अभी भी यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है कि विकास के लाभ व्यापक रूप से साझा किए जाएं और पर्यावरण सुरक्षित रहे।

चुनौतियां

- **गरीबी और असमानता:** भारत दुनिया के सबसे गरीब देशों में से एक है, जहां 22% से अधिक आबादी राष्ट्रीय गरीबी रेखा से नीचे रहती है। असमानता भी एक बड़ी चिंता का विषय है, सबसे अमीर 1% आबादी के पास देश की 70% से अधिक संपत्ति है।
- **बेरोजगारी:** भारत में एक बड़ी और बढ़ती युवा आबादी है, लेकिन उनमें से कई को नौकरी नहीं मिल पाती है। बेरोजगारी दर विशेष रूप से युवाओं और महिलाओं में अधिक है।
- **आधारभूत संरचना:** भारत का बुनियादी ढांचा अपर्याप्त और अविकसित है, जो आर्थिक विकास में बाधा डालता है। देश की सड़कें, रेलवे और बंदरगाह भीड़भाड़ वाले और अकुशल हैं, और बिजली और साफ पानी की कमी है।
- **वातावरण संबंधी मान भंग:** भारत की तीव्र आर्थिक वृद्धि एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय कीमत पर हुई है। देश का वायु और जल प्रदूषण दुनिया में सबसे खराब प्रदूषणों में से एक है, और इसके जंगल चिंताजनक दर से खघ्त्म हो रहे हैं।
- **शासन:** भ्रष्टाचार और कमजोर शासन भारत में समावेशी और टिकाऊ आर्थिक विकास में बड़ी बाधाएं हैं। भ्रष्टाचार संसाधनों को आवश्यक सेवाओं से दूर ले जाता है और व्यवसायों के लिए कुशलतापूर्वक संचालन करना कठिन बना देता है। कमजोर प्रशासन के कारण खराब नीति कार्यान्वयन और जवाबदेही की कमी भी होती है।

चुनौतियों से निपटने के उपाय

- **शिक्षा और कौशल विकास में निवेश:** उत्पादक कार्यबल बनाने और गरीबी कम करने के लिए शिक्षा और कौशल विकास आवश्यक है। सरकार को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने और युवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने में निवेश करना चाहिए
- **समावेशी और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना:** भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था काफी हद तक कृषि पर निर्भर है, लेकिन इस क्षेत्र को जलवायु परिवर्तन, भूमि क्षरण और कम उत्पादकता सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सरकार को जलवायु-स्मार्ट कृषि जैसी टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने और किसानों के लिए सिंचाई और ऋण तक पहुंच में सुधार करने में निवेश करना चाहिए।
- **बुनियादी ढांचे में निवेश:** कनेक्टिविटी में सुधार, परिवहन लागत कम करने और आर्थिक उत्पादकता बढ़ाने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश आवश्यक है। सरकार को आधुनिक सड़कों, रेलवे और बंदरगाहों के विकास के साथ-साथ बिजली और स्वच्छ पानी तक पहुंच बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए।
- **पर्यावरण की रक्षा करना:** भारत को अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए तत्काल कार्रवाई करने की आवश्यकता है। सरकार को कड़े पर्यावरणीय नियमों को लागू करना चाहिए, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना चाहिए और पुनर्वनीकरण और वनीकरण में निवेश करना चाहिए।
- **शासन में सुधार:** यह सुनिश्चित करने के लिए कि आर्थिक विकास के लाभ व्यापक रूप से साझा किए जाएं और संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाए, शासन में सुधार आवश्यक है। सरकार को भ्रष्टाचार विरोधी उपायों को मजबूत करना चाहिए, पारदर्शिता और जवाबदेही में सुधार करना चाहिए और स्थानीय सरकारों को अधिक शक्तियाँ सौंपनी चाहिए।

प्रश्न 2. बिहार में गरीबी उन्मूलन में क्या चुनौतियाँ हैं? इन चुनौतियों पर काबू पाने के उपाय सुझाएँ।

उत्तर : भारत के सबसे गरीब राज्यों में से एक बिहार में गरीबी उन्मूलन एक जटिल और बहुआयामी चुनौती है। हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, बिहार अभी भी गहरी जड़ वाली गरीबी का सामना कर रहा है, जिसका मुख्य कारण संरचनात्मक कारक और अपर्याप्त नीतिगत हस्तक्षेप हैं।

बिहार में गरीबी उन्मूलन में चुनौतियाँ

1. संरचनात्मक कारक

- **कृषि पर अत्यधिक निर्भरता:** बिहार की अर्थव्यवस्था काफी हद तक कृषि पर निर्भर है, जो 80% से अधिक आबादी को रोजगार देती है। हालाँकि, कृषि की विशेषता कम उत्पादकता, खंडित भूमि जोत और सूखे और बाढ़ के प्रति संवेदनशीलता है।

❖ **सीमित बुनियादी ढाँचा:** बिहार में सड़क, बिजली और सिंचाई सुविधाओं सहित पर्याप्त बुनियादी ढाँचे का अभाव है। इससे आर्थिक विकास बाधित होता है और गरीबों के लिए आवश्यक सेवाओं तक पहुंच सीमित हो जाती है।

❖ **उच्च निरक्षरता और कौशल अंतर:** साक्षरता दर कम है, विशेषकर महिलाओं में, और कार्यबल में महत्वपूर्ण कौशल अंतर है। इससे रोजगार के अवसर बाधित होते हैं और कमाई की संभावना कम हो जाती है।

2. अपर्याप्त नीतिगत हस्तक्षेप

❖ **अप्रभावी कार्यान्वयन:** सरकारी गरीबी उन्मूलन योजनाएं अक्सर खराब कार्यान्वयन से ग्रस्त होती हैं, जिससे भ्रष्टाचार, रिसाव और लक्षित आबादी पर सीमित प्रभाव पड़ता है।

❖ **टिकाऊ आजीविका विकल्पों का अभाव:** सरकारी कार्यक्रम अक्सर टिकाऊ आजीविका विकल्पों को बढ़ावा देने के बजाय अल्पकालिक आय सृजन पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो गरीबी के चक्र को तोड़ सकते हैं।

बिहार में चुनौतियों पर काबू पाने और गरीबी उन्मूलन के उपाय

1. कृषि को पुनर्जीवित करना

❖ **जलवायु-लचीली कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना:** कृषि उत्पादकता और जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन बढ़ाने के उपायों को लागू करना, जैसे सूखा प्रतिरोधी बीज, कुशल सिंचाई प्रणाली और फसल बीमा तक पहुंच प्रदान करना।

❖ **भूमि जोत का समेकन:** कृषि दक्षता में सुधार और आय क्षमता बढ़ाने के लिए खंडित भूमि जोत के समेकन को प्रोत्साहित करें।

2. बुनियादी ढांचे का विकास

❖ **सड़क, बिजली और सिंचाई में निवेश:** बुनियादी ढांचे के विकास में निवेश को प्राथमिकता दें, जिसमें सड़क नेटवर्क का विस्तार, विश्वसनीय बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना और सिंचाई सुविधाओं में सुधार शामिल है।

3. शिक्षा एवं कौशल विकास

❖ **साक्षरता दर बढ़ाना:** लक्षित शिक्षा कार्यक्रमों और प्रोत्साहनों के माध्यम से, विशेषकर महिलाओं में साक्षरता दर बढ़ाएँ।

❖ **व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास:** कुशल श्रम की मांग से मेल खाने और रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम प्रदान करें।

4. गरीबी उन्मूलन योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन

❖ **निगरानी और मूल्यांकन को मजबूत करें:** गरीबी उन्मूलन योजनाओं की प्रभावशीलता पर नजर रखने और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए मजबूत निगरानी और मूल्यांकन तंत्र लागू करें।

❖ **पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना:** भ्रष्टाचार और संसाधनों की बर्बादी को कम करने के लिए गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना।

5. सतत आजीविका विकल्प

❖ **गैर-कृषि आजीविका को बढ़ावा देना:** आय स्रोतों में विविधता लाने और कृषि पर निर्भरता कम करने के लिए छोटे पैमाने के व्यवसायों और हस्तशिल्प जैसे गैर-कृषि आजीविका विकल्पों के विकास को प्रोत्साहित करें।

❖ **माइक्रोफाइनेंस को बढ़ावा देना:** सूक्ष्म उद्यमों और आय-सृजन गतिविधियों के लिए ऋण और वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए माइक्रोफाइनेंस संस्थानों तक पहुंच का विस्तार करना।

❖ बिहार में गरीबी उन्मूलन के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो संरचनात्मक कारकों को संबोधित करे और नीतिगत हस्तक्षेप को मजबूत करे। बुनियादी ढांचे, शिक्षा, कौशल विकास और टिकाऊ आजीविका विकल्पों में निवेश करके, बिहार अपने नागरिकों के लिए अधिक न्यायसंगत और समृद्ध समाज बना सकता है।

प्रश्न 3. बिहार में गरीबी उन्मूलन में महिला सशक्तिकरण की भूमिका पर चर्चा करें।

उत्तर : भारत के सबसे गरीब राज्यों में से एक बिहार में गरीबी उन्मूलन में महिला सशक्तिकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महिलाओं को सशक्त बनाकर, हम गरीबी के अंतर्निहित कारणों का समाधान कर सकते हैं और एक अधिक न्यायसंगत और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

गरीबी उन्मूलन में महिला सशक्तिकरण का महत्व

❖ **आय-सृजन क्षमता में वृद्धि:** शिक्षा, कौशल विकास और संसाधनों तक पहुंच के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने से उनकी आय-सृजन क्षमता में वृद्धि हो सकती है, जिससे वे अपने घर की आर्थिक भलाई में योगदान करने में सक्षम हो सकेंगी।

❖ **बेहतर निर्णय लेने की शक्ति:** महिलाओं को सशक्त बनाने से उनके घरों में निर्णय लेने की शक्ति मजबूत होती है, जिससे उन्हें वित्तीय योजना, संसाधन आवंटन और स्वास्थ्य देखभाल विकल्पों में भाग लेने की अनुमति मिलती है।

❖ **बाल शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश:** सशक्त महिलाएं अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश करने, गरीबी के चक्र को तोड़ने और भावी पीढ़ियों की संभावनाओं में सुधार करने की अधिक संभावना रखती हैं।

❖ **सामुदायिक विकास और सामाजिक सामंजस्य:** सामुदायिक विकास पहल में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देती है, सतत विकास को बढ़ावा देती है और स्थानीय शासन को मजबूत करती है।

बिहार में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाली पहल

- **स्वयं सहायता समूह (एसएचजी):** एसएचजी माइक्रोफाइनेंस, कौशल विकास और उद्यमशीलता के अवसर प्रदान करके महिलाओं को सशक्त बनाने में सहायक रहे हैं।
- **साक्षरता और शिक्षा कार्यक्रम:** महिलाओं के बीच साक्षरता दर बढ़ने और शिक्षा तक पहुंच बढ़ने से उनके ज्ञान, कौशल और निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि होती है।
- **व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास:** व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम प्रदान करना महिलाओं को रोजगार सुरक्षित करने और आय उत्पन्न करने के लिए विपणन योग्य कौशल से लैस करता है।
- **पंचायतों में महिला आरक्षण:** पंचायत निकायों में महिलाओं के लिए आरक्षण स्थानीय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उनका प्रतिनिधित्व और भागीदारी सुनिश्चित करता है।
- **लिंग संवेदीकरण कार्यक्रम:** लिंग संवेदीकरण कार्यक्रम पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को चुनौती देते हैं और समाज के भीतर लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं।

गरीबी मुक्त बिहार के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना

- **शिक्षा और कौशल विकास तक पहुंच का विस्तार:** विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों तक पहुंच बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।
- **सतत आजीविका विकल्पों को बढ़ावा देना:** कृषि, हस्तशिल्प और छोटे पैमाने के व्यवसायों जैसे स्थायी आजीविका विकल्पों में महिलाओं की भागीदारी का समर्थन करने से उनकी आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ सकती है।
- **लिंग भेदभाव को संबोधित करना:** लैंगिक भेदभाव को संबोधित करना और समाज के सभी स्तरों पर लैंगिक समानता को बढ़ावा देना महिलाओं को सशक्त बनाने और गरीबी उन्मूलन हासिल करने के लिए आवश्यक है।
- **नेतृत्व भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना:** राजनीति, व्यवसाय और सामाजिक संगठनों सहित विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित और समर्थन करने से उनका प्रभाव और प्रभाव बढ़ सकता है।
- **महिला सशक्तिकरण के प्रति सतत प्रतिबद्धता:** महिला सशक्तिकरण के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता के लिए निरंतर नीतिगत हस्तक्षेप, संसाधन आवंटन और सामाजिक समर्थन की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि महिलाओं की आवाज सुनी जाए और उनकी क्षमता का पूरी तरह से एहसास हो।

शिक्षा, कौशल विकास, संसाधनों तक पहुंच और निर्णय लेने में भागीदारी के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाकर, बिहार एक अधिक न्यायसंगत समाज बना सकता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए गरीबी के चक्र को तोड़ सकता है।

प्रश्न 4. बिहार में समावेशी विकास हासिल करने में अनोखी चुनौतियाँ और अवसर क्या हैं? चुनौतियों पर काबू पाने और अवसरों का लाभ उठाने के उपाय सुझाएं।

उत्तर : भारत के सबसे गरीब राज्यों में से एक, बिहार, समावेशी विकास प्राप्त करने में चुनौतियों और अवसरों का एक अनूठा समूह प्रस्तुत करता है। हालाँकि राज्य ने हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण प्रगति की है, फिर भी इसे विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में गहरी गरीबी और असमानताओं का सामना करना पड़ रहा है। हालाँकि, बिहार में भी वृद्धि और विकास की अप्रयुक्त क्षमता मौजूद है।

बिहार में समावेशी विकास हासिल करने में चुनौतियाँ

- **कृषि पर अत्यधिक निर्भरता:** बिहार की अर्थव्यवस्था काफी हद तक कृषि पर निर्भर है, जो 80% से अधिक आबादी को रोजगार देती है। हालाँकि, बिहार में कृषि की विशेषता कम उत्पादकता, खंडित भूमि जोत और सूखे और बाढ़ के प्रति संवेदनशीलता है। इससे आय सृजन सीमित हो जाता है और गरीबी बनी रहती है।
- **अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा:** बिहार में सड़क, बिजली और सिंचाई सुविधाओं सहित पर्याप्त बुनियादी ढांचे का अभाव है। इससे आर्थिक विकास में बाधा आती है, आवश्यक सेवाओं तक पहुंच सीमित हो जाती है और परिवहन लागत बढ़ जाती है।
- **कम साक्षरता और कौशल अंतर:** बिहार में साक्षरता दर, विशेष रूप से महिलाओं के बीच, कम है और कार्यबल में महत्वपूर्ण कौशल अंतर है। इससे रोजगार के अवसर बाधित होते हैं, कमाई की संभावना कम हो जाती है और नई तकनीकों को अपनाने में बाधा आती है।
- **खराब शासन:** बिहार को ऐतिहासिक रूप से शासन संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिसमें भ्रष्टाचार, कमजोर संस्थान और नीतियों का धीमा कार्यान्वयन शामिल है। इससे प्रभावी गरीबी उन्मूलन और समावेशी विकास पहल में बाधा आती है।

बिहार में समावेशी विकास के अवसर

- **कृषि परिवर्तन:** बिहार में जलवायु-लचीली प्रथाओं को बढ़ावा देने, सिंचाई सुविधाओं में सुधार और फसल विविधीकरण को प्रोत्साहित करके अपने कृषि क्षेत्र को बदलने की क्षमता है। इससे उत्पादकता में वृद्धि, उच्च आय और बेहतर खाद्य सुरक्षा हो सकती है।
- **बुनियादी ढांचे का विकास:** बिहार की आर्थिक वृद्धि के लिए सड़क, बिजली और सिंचाई जैसे बुनियादी ढांचे में निवेश महत्वपूर्ण है। बेहतर कनेक्टिविटी, विश्वसनीय बिजली आपूर्ति और बढ़ी हुई सिंचाई उत्पादकता को बढ़ावा दे सकती है, निवेश आकर्षित कर सकती है और बाजार पहुंच का विस्तार कर सकती है।

- **कौशल विकास और शिक्षा:** साक्षरता दर बढ़ाना और व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम प्रदान करना बिहार के कार्यबल में कौशल अंतर को संबोधित कर सकता है। इससे रोजगार क्षमता बढ़ेगी, उद्योग आकर्षित होंगे और आय बढ़ेगी।
- **सुशासन:** नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन और संसाधनों के समान वितरण के लिए शासन को मजबूत करना आवश्यक है। इसमें पारदर्शिता, जवाबदेही में सुधार और नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देना शामिल है।

चुनौतियों पर काबू पाने और अवसरों का लाभ उठाने के उपाय

- **लक्षित गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम:** लक्षित गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को लागू करें जो महिलाओं, अल्पसंख्यकों और भूमिहीन मजदूरों जैसे विभिन्न समूहों की विशिष्ट आवश्यकताओं और कमजोरियों को संबोधित करें।
- **वित्तीय समावेशन:** माइक्रोफाइनेंस संस्थानों तक पहुंच बढ़ाकर और वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान करके वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना। यह व्यक्तियों को व्यवसाय शुरू करने, आजीविका में सुधार करने और अपने भविष्य में निवेश करने के लिए सशक्त बना सकता है।
- **उद्यमिता और लघु व्यवसाय विकास:** पूंजी, प्रशिक्षण और बाजार संपर्क तक पहुंच प्रदान करके उद्यमिता और लघु व्यवसाय विकास का समर्थन करें। इससे रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं, अर्थव्यवस्था में विविधता आ सकती है और कृषि पर निर्भरता कम हो सकती है।
- **सामाजिक सुरक्षा जाल:** कमजोर आबादी को झटके से बचाने और सुरक्षा कवच प्रदान करने के लिए खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों और सामाजिक बीमा योजनाओं जैसे सामाजिक सुरक्षा जाल को मजबूत करें।
- **महिला सशक्तीकरण:** आर्थिक गतिविधियों, निर्णय लेने और नेतृत्व की भूमिकाओं में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए शिक्षा, कौशल विकास और संसाधनों तक पहुंच के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना।
- **विकेंद्रीकरण और स्थानीय शासन:** स्थानीय आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुरूप विकास पहलों को तैयार करने के लिए स्थानीय सरकारों को अधिक स्वायत्तता और संसाधनों के साथ सशक्त बनाना।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देना:** बुनियादी ढांचे के विकास, कौशल विकास और रोजगार सृजन के लिए निजी क्षेत्र की विशेषज्ञता और संसाधनों का लाभ उठाने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करें।
- **डेटा-संचालित नीति निर्माण:** नीति निर्धारण को सूचित करने के लिए डेटा और साक्ष्य का उपयोग करें और सुनिश्चित करें कि हस्तक्षेप लक्षित, प्रभावी और न्यायसंगत हों।
- **जाचना और परखना:** प्रगति पर नजर रखने, कमियों की पहचान करने और आवश्यक सुधार करने के लिए मजबूत निगरानी और मूल्यांकन तंत्र स्थापित करें।
- **सतत प्रतिबद्धता:** बिहार में समावेशी विकास हासिल करने के लिए सरकार, नागरिक समाज, निजी क्षेत्र और व्यक्तियों सहित सभी हितधारकों की निरंतर प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR